INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक और वर्तमान समस्याएँ
(Dr. Laxminarayan Lal's Drama and Current Problems)

डॉ. शर्मिलाबेन सुमंतराय पटेल
कार्यकारी आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री रंग नवचेतन महिला आर्ट्स कालेज वालीया,
ता. वालीया, जि. भरूच (गुजरात)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/04.2022-23477513/IRJHIS2204004

प्रस्तावना :

मनुष्य जीवन की विकट और ज्वलंत समस्याओं को अभिव्यक्त करनेवाली जीवंत और सशक्त साहित्य की सबसे सुंदर एवं महत्व पूर्ण विद्या है नाटक। आज के हिंदी नाटक से जीवन का काई क्षेत्र अछूता नहीं रहा। पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंगो की नयी दृष्टि से अभिव्यक्ति, सामाजिक युग में औद्योगिक विकास के अभिशाप और विषमताओं से टूटते जीवन मूल्यों और विघटित मानवीय संबंधों की सशक्त अभिव्यक्ति स्वातंत्र्योतर नाटकों में मिलती है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल अपधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच को नई दिशा और पहचान प्रदान करनेवाले समर्थ नाटककार रहे है।

स्वाधिनता पश्चात सामाजिक संरचना स्थिर नहीं रही। समाज में अनेक स्तर पर परिवर्तन हुए। सामाजिक शब्द यहाँ व्यापक स्तर पर प्रयुक्त हुआ है, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समेत हर क्षेत्र को इसमें समाविष्ट कर लिया है।

'अंधा कुआँ' से नाटक श्रृंखला का प्रारंभ करनेवाले नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने इस नाटक के द्वारा भारतीय और विशेषतः ग्रामीण समाज में नारी की दयनीय स्थिति और यातना को स्पष्ट किया है। ग्रामीण किसान दंपति की जीवन कथा – जिसमें पुरूष नारी पर अत्याचार करने के लिए स्वतंत्र है। नायक भगौती के अत्याचार से तंग आकर उसकी पत्नी सूका इंदर के साथ भाग जाती है, परंतु पुलिस की मदद से वह सूका को पुनः घर लाता है, और उस पर अत्याचार करता है। यहाँ गलती केवल सूका की नहीं है, भगौती भी तो दूसरी औरत को अपने घर बिठाए हुए है। सूका उस औरत को अपने प्रेमी के साथ भाग जाने में मदद करती है, तो भगौती उस पर और अधिक अत्याचारकरता है। जिससे तंग आकर सूका कुएँ में छलांग लगाकर मरना चाहती है, लेकिन कुआँ सूखा है, इसलिए वह मर नहीं पाती। तब उसकी प्रतिक्रिया कुछ इस तरह पाठकों के समक्ष आती है – ''अंधा कुआँ वह नहीं है, जिसमें डूब मरने के लिए वह गई थी, अपितु अंधा कुआँ यही है, जिसके

संग वह ब्याही गई है, जिसमें एक बार गिरने के बाद फिर कभी नही उबर सकी।'' 1 अत्याचार की हद तो वहाँ होती है, जबवह सूका को चारपाई से बाँधकर लोहे के गर्म सलाखों से उसे दागना चाहता है, लेकिन भाई अलगू के आ जाने से वह ऐसा नहीं कर पाता। ग्रामीण समाज अभी भी सामंती मूल्यों और अंधविश्वासों में जी रहा है तथा नारी के प्रति अन्याय, अत्याचार को पुरूष का अधिकार मानता है, ग्रामीण समाज के इस तथ्य का यथार्थ चित्रण नाटककार ने किया है।

इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने नारी की यातना को तथा उस यातना के प्रतिरोध में उसकी चेतना को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

सामंतवादी पारंपरिक मूल्यों में जकडी नारी तथा पूँजीवादी मूल्यों से पीडित समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करनेवाला डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का नाटक है – 'रातरानी'। जिसका नायक जयदेव एक ऐसा शोषक पति है, जो पत्नी कुंतल को पत्नी नहीं, दहेज में मिली हुई एक औरत समझता है। वह जुए में सारा घन हार जाता है और कुंतल को नौकरी करने के लिए विवश करता है। इतना ही नहीं जयदेव और उसके मित्र कुंतल की सहेली को अपनी अंकशयनी बनाना चाहता है।

कुंतल का ही प्रतिक रातरानी है। जैसे रातरानी का फूल सारे वातावरण को सुगंध से भर देता है, वैसे कुंतल जैसी आदर्श भारतीय नारी भी अपने पति के घर को तथा समाज को सुगंधित कर देती है। इसके बावजूद भी पुरूष प्रधान समाज में नारी का सम्मान नहीं होता। चाहे वह आदर्श पत्नी हो, परंतु पुरूष पत्नी को केवल अपनी व्यक्तिगत संपति मानता रहा है।

'रातीरानी' नाटक के माध्यम से वर्तमान भारतीय समाज के मध्यमवर्गीय नारी की पीडा कुंतल के इस कथन में मुखर होती है –'' मूल अपराधिनी तो मैं हूँ, स्त्री का जन्म पाकर। यह हृदय पाकर। माता पिता के द्वारा पत्नीत्व का आदर्श पाकर। इस शरीर पर यह चीकनी चमडी पाकर, काश मैंने तुम्हारी तरह दुनिया देखी होती।'' 2 साथ ही दहेज की समस्या, मध्यम वर्गीय नारी की स्थिति, औद्योगिक विकास के साथ स्ट्राइक का मूल कारण तथा श्रमिकों की उद्योगपतियों के विरूद्ध प्रतिक्रिया ने नाटक को समसामायिक संदर्भो के साथ जोड दिया है।

'मि. अभिमन्यु' नाटक के द्वारा लेखक ने वर्तमान सामाजिक आदर्श को व्यक्त करने का प्रयास किया है। नाटक का नायक राजन सरकारी अधिकारी होने के कारण अभिमान्यु की भाँति प्रारंभ में भ्रष्टाचार से लडकर सरकारी तंत्र में परिवर्तन लाना चाहता है। जैसे – केजरीवाल के गोदाम को सील करना, सत्ताधारी दल के विधायक गयादत्त के मामले को दबा देने की सिफारिश नामंजूर करना, आत्मन की उसके बंगले में हत्या करवाकर राजन को हत्या के मामले में फँसाने का प्रयत्न करना। परंतु राजन सत्य का गला नहीं घोटना चाहता, वह त्यागपत्र देना चाहता है, परंतु घरवालों के आगे वह झुक जाता है। अंततः वह आत्मन की आत्महत्याा की पुष्टि करता है। पी.एफ. की घनराशि, बच्चों की पढाई, ऊँचे पद का लोभ उसे कायर बना देता है। परिवार की सुरक्षा, सुख, सुविघा, पद, सम्मान जैसे महारथियों के चक्रव्यूह में फँसकर वह हार जाता है। उसकी अंतरात्मा मर जाती है। यहाँ राजन के माध्यम से समकालीन समाज में जनहितैषी और ईमानदार अधिकारियों की

नियति और विडंबना को प्रस्तुत किया गया है –''हम सब किसी न किसी चक्रव्यूह में घिरे है और उसका विरोध भी नहीं करते। अपनी अपनी कायरताओं के कारण या फिर इस कारण कि हम सब मि. अभिमन्यु है। महाभारत के अभिमन्यु की तरह साहसी, वीर और अंततः शहीद अभिमन्यु नहीं।3

नाटक का नायक राजन सत्य के लिए महाभारत के अभिमन्यु की तरह प्राणों का बलिदान नहीं देता, परंतु पद, प्राण, प्रतिष्ठा और सुख–सुविधा बचाकर अंतरात्मा का बलिदान कर अपने जीवन मूल्यों का उत्सर्ग करता है।

'अबदुल्ला दीवाना' नाटक के द्वारा लेखक ने आजादी के बाद की भारत की वास्तविक तस्वीर चित्रित करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता के पूर्व के हमारे स्वप्न, मूल्यों और आदर्शो को पूंजीवादी सत्ता ने बडी निर्ममता से कुचल दिया है। अवसरवाद तथा भ्रष्टाचार चारों तरफ फैल गया है, जिसकी यातना आज की युवा पीढी को भुगतनी पडती है। प्रजातंत्र, सरकार, न्याय व्यवस्था अभी अर्थतंत्र और पूँजीवाद के खरीदे गये गुलाम जैसे बन गये। नाटक का नायक इसी मूल्यहीनता और मूल्यों के विघटन का प्रतीक है। जैसे ''अब्दुल्ला उस असंतुष्ट मानस का प्रतीक है, जिसे बलपूर्वक मार दिया गया है।'' 4

इस नाटक के द्वारा लेखक ने खोखले प्रजातंत्र पर प्रहार किया है साथ ही प्रशासन–न्यायतंत्र पर भी व्यंग किया हैं

'एक सत्य हरिशचंद्र' नाटक में दलित नेता लौका और जमींदार देवधर के विद्रोह को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ सत्यवादी हरिशचंद्र के मिथक को नए संदर्भ में रूपांतरित किया गया है। गाँव में खेले जानेवाला नाटक हरिशचंद्र में लौका को स्वर्ग चलने (वास्तव में इस प्रकार से उसे मारकर हत्या करने का षडयंत्र) का निमंत्रण दिया जाता है, जिसे लौका अस्वीकार कर देता है, और कहता है – ''हरिशचंद्र सदा अपने सत्य की परीक्षा देते रहे और तुम परीक्षा लेते रहे। मैंने नाटक में राजा बनकर देख लिया। जब तक तुम हो, हम केवल बनाए जा सकते है। अपने आप कुछ नहीं हो सकते है। पर अब बनने और होने का मर्म हमें मिल गया है। चलो अब तुम्हें देनी होगी परीक्षा अपने सत्य की।'' 5

''इस प्रकार लौका और उसके साथियों को जिस जीवन की प्राप्ति होती है, वह वर्तमान राजनीतिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण है, वस्तुतः नाटककार ने जनजागृति को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है।''6

'कलंकी' नाटक हिंदू मिथक का वर्तमान जीवन के संदर्भ में उपयोग तथा जीवन मूल्यों के अनुरूप वर्तमान युगबोध को संप्रेषित करता है। मनुष्य के आंतरिक यथार्थ को उजागर करनेवाले इस नाटक में यह व्यंजित किया गया है, कि व्यक्ति के ऊपर आधुनिक जीवन का दबाव अत्यधिक बढ गया है। इसी से वह अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है।

'गंगामाटी' में लेखक ने स्वातंत्र्योतर ग्रामीण जीवन में व्याप्त शोषण, पाखंड, कुसंस्कार, छुआछूत, अंधविश्वास, धर्मभीरू जैसी बुराईयों से उत्पन्न समस्याओं का व्यापक चित्रण किया गया है। यहाँ कर्ज के बदले नारी को बंधक बनाकर रखना सामान्य सी धटना समझी जाती है। सीता के बाप

ने कभी चंदरा से तीन सौ रूपये कर्ज में लिये थे। तभी से वह कर्ज व व्याज के बदले बंधक है। चंदरा उसे छोटी छोटी बातों पर पीटता है। जब कुसुम उसे पूछती है किवह सीता को दिन में कितनी बार मारता है ? तो वह सहज भाव से अपनी बहादुरी प्रदर्शित करते हुए कहता है –''दो चार बार तो हो ही जाता है।''7 दूसरी तरफ शिक्षित–धर्मांध देवल जैसा प्रतिभाशाली व्यक्ति भी गंगा जैसी जागरूक नारी को बार बार अपमानित और प्रताडित करते दिखाई पडते है।

'मादा कैक्टस' नगरीय जीवन से जुडी स्त्री–पुरूष की समस्याओं का बोध कराता है। अरविंद जैसे लोग जीवन जिए बिना ही अपना वैवाहिक जीवन समस्याग्रस्त कर देते है। अरविंद की ऐसी मनोवृत्ति के कारण सुजाता जैसी प्रबुद्ध और सुशील नारी का जीवन अभिशप्त हो जाता है। स्वयं अरविंद का अहंकार उसे क्षय रोगी बना देता है। उसका मानना है कि ''मादा कैक्टसके संपर्क में आनेवाला नर जीवन विहीन हो जाता है, सूख जाता है, मर जाता है।''8 यह मनोवृति दोंनों का जीवन नरक बना डालती है। पुरूष व स्त्री के द्वन्द्व से उत्पन्न समस्याएँ वैवाहिक जीवन को कितना भयानक बना देती है। यह मादा कैक्टस से सहज ही अनुभव किया जा सकता है।

युगीन समस्या – प्रेम विवाह, शासक की हिंसक मनोवृति तथा अन्य विसंगत स्थिति को झेलती मध्यमवर्गीय दुनिया की बैचेनी को नया अर्थ देनेवाले 'व्यक्तिगत' नाटक में रचनाकार का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत विशेषता को व्यंजित करना नहीं है, बल्कि उसके द्वारा समसामयिक स्थिति को व्यर्थ रूप में उद्घाटित करना मुख्य रहा है। व्यक्ति जिस व्यक्तिगत दुःख से जूझ रहा है, वह पूरे समाज का है –

''कहीं पढा था, सामाजिक स्वतंत्रता की बुनियादी स्वतंत्रता ? हमारा रहन–सहन, खाना–पीना, पहनना–ओढना, हमारी सारी आदतें उस भूखे गुलाम जैसी है जिसे कभी संतोष नहीं होता।''9

ग्रामीण परिवेश को अपने नाटक में चित्रित करनेवाले नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल मानते है कि गाँवों के पतन का मुख्य कारण धर्म और राजनीति है। भय के कारण धर्म उपजा है और शक्ति हीनता के कारण राजनीति प्रभावशाली बनी है। 'संस्कार ध्वज' नाटक की भुमिका में नाटककार का कथन है – ''नाटक में जहाँ पराधीन भारत की तस्वीर उभरकर सामंतवाद पर चोट की गई है वही यह भी दर्शाया गया है कि दरिद्रता, अभाव और अंधविश्वास के अंधेरे में उभरतर हुआ भारतवासी एक नये विहान की ओर बढ रहा है। ..... नाटक में यह भी निरूपित करने का प्रयत्न हुआ है कि जात–पात, छुआ–छूत, भेद–भाव इनको हंमेशा हमारे शोषकों, प्रचारकों ने बढावा दिया और हमारा शोषण किया। संस्कार ध्वज ज्ञान का प्रतिक है। ज्ञान के सहारे ही भारत की तस्वीर बदली जा सकती है और अज्ञान के विषाक्त अंधेरे से मुक्ति पायी जा सकती है।''10

वस्तुतः नाटककार का मुख्य उद्देश्य भारतीय ग्रामीण जीवन की व्यवस्था और अंग्रेजी टकरावों–प्रभावों का विश्लेषण करते हुए आज के तथा कथित प्रजातांत्रिक पंचायतीराज के कटु यथार्थ को प्रस्तुत करना है, जहाँ पंच परमेश्वर के बजाय गुंडा या शैतान हो गया है।

स्त्री स्वातंत्र्य, विवाहेतर प्रेमसंबंध तथा पुनर्विवाह के मूल्यों पर आधारित 'सूर्यमुखी' नाटक में कृष्ण की मृत्यु के बाद कृष्ण – रूक्मिनी के पुत्र प्रद्युमन और कृष्ण की अंतिम पत्नी वेनुरती के

विवाहेतर संबंध को ठोस पौराणिक आधार के बिना प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक समाजविज्ञान और मनोविज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार के संबंधो की संभावना हो सकती है। यहाँ प्रद्युमन और वेनु आधुनिक स्त्री–पुरूष के रूप में अपने विवाहेतर प्रेमसंबंध का समर्थन करते है। वभ्रु कृष्ण की असंख्य विधवाओं के पुनर्विवाह का प्रस्ताव अर्जुन सम्मुख रखता है। रूक्मिनी वेनु को पुच्छल तारें की तरह अशुभ मानती है, जिसने कृष्ण को तोडा तथाप्रद्युमन को फँसा लिया। वेनु रूक्मिनी से कहती है : प्रद्युमन मेरे लिए एक अनिवार्य मनुष्य था, केवल मनुष्य, जैसे मैं उसके लिए एक अनिवार्य स्त्री थी। तथा मेरा यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि मेरा पति वही होगा, जो मेरा प्रियतम हो। इस प्रकार यह नाटक प्रेम के संदर्भ में स्त्री स्वातंत्र्य तथा पुनर्विवाह के मूल्यों को प्रस्तुत करता है। दोनों आधुनिक जीवन मूल्य है।

मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित 'दर्पन' नाटक भी नारी जीवन की समस्याओं की और इंगित करता है। कुंठाग्रस्त पूर्वी जीवन के कठोर सत्य से पलायन कर खुशियाँ पाने की लालसा रखती है। अहंकार उसे वास्तविक स्थिति तक पहुँचने नहीं देता। वह बौद्ध धर्म की रूढ परंपराओं को त्यागकर जीवन को नई दिशा में मोडना चाहती है। परंतु उसकी यह कामना कुछ ही समय में बिखर जाती है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने बताया है कि दोहरे व्यक्तित्व की जटिलताएँ व्यक्ति को समस्याग्रस्त बना देती है। बंधन के बिना मुक्ति और राग बिना निष्काम होना संभव नहीं है, यह सम्यक ज्ञानही हमें ऐसी समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है।

'यक्ष प्रश्न' में भी पौराणिक कथा और पात्रों को आधुनिक संदर्भ में जोडकर विविध समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यहाँ परोक्ष रूप में राजनेता, उद्योगपति, अफसर आदि की बढती हुई महत्वकांक्षाओ के कारण उत्पन्न समस्याएं व्यंजित है। सत्यप्रिय का यह कथन समाज की कुटिल–स्वार्थी मानसिकता के नग्न सत्य को उजागर करता है–''रूको क्या तुम लोग जिंदा हो ? बालू रेत की तरह बिखरे व फैले हुए। हवा में उडने वाले। सूराखों में गिरनेवाले चंद टूकडों व स्वार्थों में बिकनेवाले। जो चाहे जैसा तुम्हे इस्तमाल कर ले.....यही है तुम्हारे जीवित रहने का प्रमाण ?''11 सत्यप्रिय के इस कथन के द्वारा आधुनिक स्थितियों के माध्यम से वर्तमान समाज की ज्वलंत समस्याओं को हमारे सामने रखा है, जिनके उत्तर देने में लोग असमर्थ हो गये है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी में नाटककारों की एक नई पीढी के नाटककार के रूप में लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने नाटकों में समसामयिक दहेज की समस्या, गाँव की दयनीय स्थिति, शोषण की समस्या, पाखंड, कुसंस्कार, छुआछुत, अंधविश्वास, धर्मभीरू जैसी बुराईयों से उत्पन्न समस्याओं, राजनीतिक समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, नगरीय जीवन से जुडी स्त्री–पुरूष की समस्याओं, मध्यमवर्गीय नारी की पीडा जैसे वर्तमान युग के ज्वलंत प्रश्नों का व्यापक चित्रण किया है।

संदर्भ सूचि :

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल,अंधा कुआँ – भारती भंडार प्रयाग पृ. – 22
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रातरानी – नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली पृ. – 46

3. डॉ. नरनारायण राय – नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्य साधना– पृ.–80
4. डॉ. दिनेशचंद्र वर्मा – स्वातंत्र्योतर हिंदी नाटक समस्याएँ – समाधान – पृ. – 196
5. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, एक सत्य हरिशचंद्र – पृ. – 67
6. डॉ. शेखर शर्मा – समकालीन संवेदना और हिंदी नाटक – पृ. – 261
7. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गंगा माटी – पीताम्बर पब्लिकेशन कंपनी, नई दिल्ली पृ.– 29
8. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मादा कैक्टस – नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली पृ.–20
9. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, व्यक्तिगत – नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली पृ.–42
10. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, संस्कार ध्वज की भूमिका – नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली
11. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, यक्ष प्रश्न – राजपाल एन्ड सन्स, नई दिल्ली पृ.– 32